Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग

में

पी-एच. डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

की

रूपरेखा

शोध निर्देशक

प्रो. आर. के. एस. डागर

शोध छात्र

अनुज कुमार

पञ्जीकरण संख्या- 19073

योग एवं शारीरिक शिक्षा संकाय

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249404

2019-20

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ओ३म् ॥

सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन

शारीरिक शिक्षा एवं खेल विभाग

में

पी-एच. डी. उपाधि

हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध

की

रूपरेखा

शोध निर्देशक

प्रो. आर. के. एस. डागर

शोध छात्र

अनुज कुमार

पञ्जीकरण संख्या- 19073

योग एवं शारीरिक शिक्षा संकाय

गुरुकुल कांगड़ी (समविश्वविद्यालय), हरिद्वार (उत्तराखण्ड) - 249404

2019-20

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तावना

सहारनपुर गंगा एवं यमुना की पवित्र नदियों के मध्य फैले हुए 'दो-आब' के अधिकतर उत्तरी भाग से बना है। सहारनपुर भारत वर्ष में स्थित उत्तर प्रदेश प्रांत का एक मंडल है। सहारनपुर जिले को 1997 में मंडल के रूप में दर्जा प्राप्त हुआ। सहारनपुर शिक्षा के दृष्टिकोण से एक अच्छा क्षेत्र है यहां पर अनेक सरकारी स्कूल, प्राइवेट स्कूल, ऐडेड व सरकारी कॉलेज, प्राइवेट एवं राज्य विश्वविद्यालय स्थित है। सहारनपुर मंडल में शिक्षा के उचित साधन विद्यमान है सहारनपुर मंडल में परिषदीय जूनियर हाईस्कूलों की कुल संख्या 1172 है जिनमें से सहारनपुर में 576 मुजफ्फरनगर में 382 एवं शामली में 214 स्कूल हैं। खेल संसाधनों को देखा जाए तो हम पाते है कि सहारनपुर मण्डल के जिले सहारनपुर में खेल प्रतिभाओं की कमी नहीं है युवा चाहते हैं कि खेलों में नाम रोशन करे, लेकिन सुविधाओं का अभाव उनकी राह में बाधक बन रहा है। खेल सुविधाएं बेहतर बनाने के दावे तो तमाम होते हैं, लेकिन अमल नहीं होता, जो काम हो रहे हैं वह भी अधर में लटके हैं या गति धीमी है। भारतवर्ष प्राचीन काल से ही शारीरिक शिक्षा का प्रमुख केंद्र रहा है। अनेक सभ्यताओं से मिले प्राचीन प्रमाण सिद्ध करते हैं कि कभी खेलो एवं शारीरिक शिक्षा में हम सिरमौर हुआ करते थे। शारीरिक शिक्षा की प्रचलित अवधारणाएं एवं अनुभव शारीरिक शिक्षा के इतिहास पर निर्भर करती हैं। भारत का शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का इतिहास गाथाओं, मौखिक व्याख्यानों, लोक कथाओं, युद्धों की कहानियों, योग ऋषियों की समाधियों इत्यादि से ज्ञात होता है। "हड़प्पा एवं मोहनजोदाड़ो के समय में बड़े-बड़े सार्वजनिक स्नानागार थे जहां नागरिक उत्तम स्वास्थ्य के लिए व्यायाम करते थें।"(सिंह,2018,पेज सं० 64.) राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शारीरिक शिक्षा एवं खेलों का अध्ययन करने के उपरान्त हम पाते हैं कि शारीरिक स्वस्थता, शारीरिक शिक्षा एवं खेलों के क्षेत्र में जिस प्रकार अन्य राष्ट्रों ने निरन्तर प्रगति की है एवं अपने दैनिक दिनचर्या के अहम पलों में से कुछ पल निकालकर अपने मनोरंजन हेतु, अपने स्वास्थ्य को उत्तम बनाने हेतु, स्वयं को निरोग रखने हेतु, खेलों में आगे बढ़ने हेतु जिस प्रकार से स्वयं आगे बढ़कर शारीरिक शिक्षा एवं खेल-कूद को महत्त्व दिया गया है, उस प्रकार हम भारतीय स्वयं को आगे नहीं बढ़ा पाये हैं। अन्य देशों ने बहुत से खेलों एवं व्यायाम को अपनी संस्कृति एवं दैनिक दिनचर्या के रूप में अपनाया। परन्तु हम हमारी सांस्कृतिक विरासत खेल को छोड़कर भौतिकवादिता के जाल में स्वयं को फंसाते चले गये। विदेशी जहां अपने शारीरिक एवं मानसिक बल को शारीरिक शिक्षा से बढ़ाते गये वहीं हम निरन्तर ह्रास की ओर चलते गये। वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा सूचकांक 2021 के अनुसार हम 195 देशों में 66 वें स्थान पर है। विश्व स्वास्थ्य सुरक्षा (GHS) सूचकांक की स्कोरिंग प्रणाली में तीन स्तर शामिल हैं। 0-33.3 निचले स्तर पर, 33.4-66.6 मध्यम एवं 66.7-100 शीर्ष स्तर है। भारत का स्कोर 42.8 है जो वर्ष 2019 की तुलना में 0.8 कम है। स्वास्थ्य का गिरता स्तर वास्तव में चिन्ताजनक है। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एन एस आर बी) की 2018 की रिपोर्ट में बताया गया कि वर्ष 2018 में भारत में कुल 134516 लोगों ने आत्म हत्या की जिनमें से 23784 बीमारी से तंग थे। यह आंकड़ा यह दर्शाने के लिए पर्याप्त है कि हम भारतीय शारीरिक व मानसिक रूप से सबल नहीं है। भारत जैसे देश में अगर हम देखें तो खेलों के प्रति अरुचि, एक समान शिक्षा न मिल पाना, समान काम के लिए समान वेतन न मिल पाना आदि बहुत से कारक शारीरिक व मानसिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असंतुलन के लिए जिम्मेदार है। बच्चों को शारीरिक एवं मानसिक रूप से सबल बनाने के लिए आवश्यकता है कि उनको प्राथमिक स्तर से ही शारीरिक शिक्षा अनिवार्य रूप से दी जाये। US Department of Health Service की एक रिपोर्ट के अनुसार "व्यायाम करने एवं पौष्टिक भोजन खाने वाले लोगों को स्वस्थ जीवन जीने के अवसर अधिक होते हैं।" वर्ष 2013 में उत्तर प्रदेश की तत्कालिक राज्य सरकार ने बच्चों के शारीरिक व मानसिक स्तर से वृद्धि हेतु परिषदीय जूनियर हाई स्कूल (जिसमें बच्चों की संख्या 100 से अधिक थी) में शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की नियुक्ति की थी। उनके दायित्वों में प्रतिदिन व्यायाम एवं योग कराना, प्रार्थना कराना, कोचिंग देना, नैतिक शिक्षा का ज्ञान देना इत्यादि शामिल है। अनुदेशकों की योग्यता का निर्धारण बीपीएड (बैचलर ऑफ फिजिकल एजुकेशन) रखा गया था। बीपीएड को शिक्षा के क्षेत्र की बी एड के समकक्ष माना जाता है। दोनों में प्रवेश के लिए योग्यता बैचलर डिग्री होती है। अनुदेशकों का वेतनमान निवर्तमान सरकार ने रूपये 7000/- प्रतिमाह रखा था जो वर्तमान 2020-21 में भी जस का तस बना हुआ है। परन्तु ऐसी जूनियर हाईस्कूल जिनमें छात्रों की संख्या 100 नहीं थी उनमें अनुदेशक नियुक्ति नहीं किए गए जिसके कारण ऐसे स्कूलों के बच्चे शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों द्वारा कराये जाने वाली गतिविधियों से पूर्णता वंचित रहे वर्ष 2013 के बाद बी एड योग्यताधारियों के लिए अनेक पद निकाले गए परन्तु प्राइमरी एवं माध्यमिक स्तर के शिक्षक के लिए बीपीएड योग्यता धारियों की सरकारों द्वारा अवहेलना की गयी इसी क्रम में इन समस्याओं के निस्तारण हेतु निवर्तमान उत्तर प्रदेश सरकार ने जूनियर हाई स्कूलों में शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों के कार्य एवं दायित्व सम्बन्धी निर्देश जारी किये थे।

इन निर्देशों के अनुसार-

शिक्षा के उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है। शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ छात्र सही मायनों में राष्ट्र की पूंजी होते हैं। शारीरिक शिक्षा व स्वास्थ्य के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस विषय को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। राज्य में खेलों को प्रोत्साहन प्रदान करने, बालको में स्वास्थ्य की उत्तम आदतों का विकास करने तथा दक्षता व क्षमता सम्पन्न बालकों को खेलों में आगे बढावा देने के उद्देश्य गयी है।

1.विषय का सैद्धांतिक ज्ञान देने हेतु कक्षा शिक्षण करना।

2. प्रार्थना स्थल की गतिविधियों को सुचारू रूप संचालन करना।

3. सामूहिक रूप से बच्चों का शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के महत्व से अवगत कराना।

4. व्यायाम योग व प्राणायाम की जानकारी कराना। प्रतिदिन इनका अभ्यास कराना।

5. प्रार्थना के समय नैतिक प्रसंगों के प्रस्तुतीकरण के साथ पीटी करवाना।

6. राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय गीत व राष्ट्रीय प्रतीकों का ज्ञान कराना।

7. नशीले पदार्थों से होने वाली हानियों से बच्चों का परिचित कराकर उन्हें इनके सेवन न करने के प्रति जागरूक करना।

8. पाठ्यक्रम के अनुसार विभिन्न खेलों जैसे कबड्डी, खो-खो, हॉकी, बॉलीबॉल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुटबाल टेबल टेनिस, बैडमिंटन, बास्केटबाल की जानकारी कराई जाए साथ ही

समय-समय पर इन्हें खिलाया जाएं।

9. बच्चे की रुचि, क्षमता के अनुसार बच्चों का विभिन्न खेलों के लिए चिन्हित किया जाए तथा उन्हें ब्लॉक, जनपद व मंडल स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने हेतु उचित रूप से प्रशिक्षण दिया जाये।

10. विद्यालय में समय-समय पर खेल व पीटी, योग आदि की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले बच्चों को पुरस्कृत करना।

11. स्वास्थ्य एवं स्वच्छता का नियमित परीक्षण करना तथा उन्हें अच्छी आदतों हेतु प्रेरित करना।

12. विभिन्न प्रकार की दौड, ऊँची और लंबी कूद, गोला फेंक, डिस्कस फेंक का आयोजन करना एवं बच्चों को इनका नियमित अभ्यास कराना।

13. अनुशासन, खेल भावना, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाना, नेतृत्व क्षमता का विकास करना एवं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय खेल प्रतिस्पर्धाओं की बच्चों की जानकारी कराना।

शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना है शारीरिक एवं मानसिक रूप से स्वस्थ छात्र ही सही अर्थों में राष्ट्र की पूजी होते हैं। शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य के इसी महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस विषय को पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया। राज्य में खेलों को प्रोत्साहन देने बालकों में स्वास्थ्य की उत्तम आदतों का विकास करने क्षमता एवं दक्षता के धनी बालकों को खेलों में आगे बढ़ावा देने के उद्देश्य से शारीरिक शिक्षा व स्वास्थ्य हेतु अनुदेशकों की नियुक्ति उच्च प्राथमिक स्कूलों में की गई है। इन कार्यों एवं दायित्व को देखते हुए ₹ 7000 प्रति माह मानदेय 'ऊंट के मुंह में जीरा' वाली कहावत को चरितार्थ करता था। अपने विकासखंड में स्कूल ने मिलने पर चयनित अभ्यर्थियों की नियुक्ति घर से 40 से 50 किलोमीटर के दायरे में कर दी गई। ₹ 7000 वेतन और घर से दूर नियुक्ति वास्तव में अनुदेशकों के सामने परिवार के भरण पोषण का संकट खड़ा कर रही है।

आधुनिकता के इस दौर में भारत ही नहीं अपितु पूरा विश्व कोविड-19 जैसी महामारी से पूरी तरह ग्रस्त है विकसित एवं विकासशील सभी प्रकार के राष्ट्र इस संकट का सामना कर रहे हैं। यह महामारी विश्व इतिहास की सबसे बड़ी मानव क्षति वाली बीमारी मानी जा रही हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन का कहना है कि कोरोना वायरस से बच्चे, बूढ़े, जवान सभी संक्रमित हो सकते हैं परन्तु हृदय रोग, अस्थमा एवं मधुमेह जैसी बीमारियों से ग्रसित लोगों में कोरोना सक्रमण का खतरा अधिक है जो स्पष्ट करता है कि स्वस्थ रहना अत्यंत आवश्यक आवश्यकता है। कोरोना ही नहीं अपितु अन्य बहुत सारी बीमारियां निरंतर मनुष्य को काल का ग्रास बना रही है। आज का युवा व बच्चा एकांकी हो गया है। जिसके कारण उसका व्यवहार लगातार रूढ हो रहा है और मानव आत्महत्या की ओर अग्रसर हो रहा है। WHO की एक रिपोर्ट के मुताबिक हर आयु वर्ग में मौत के 20 प्रमुख कारणों में से सुसाईड भी एक है। दुनिया में प्रत्येक 40 सेकेंड में कहीं ना कहीं कोई व्यक्ति आत्महत्या करता है। इस प्रकार के आंकड़ो को देखते हुये आवश्यकता है कि बच्चे को सम्पूर्ण रूप से विकसित किया जाए जिसके लिए आवश्यक हो जाता है कि प्राथमिक स्तर से इस प्रकार की शिक्षा दी जाए जिससे उसका सम्पूर्ण विकास हो और इसका एक मात्र विकल्प है- शारीरिक शिक्षा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकारों द्वारा उपेक्षित बीपीएड डिग्रीधारी अनुदेशकों का बच्चों, समाज, राष्ट्र के लिए शारीरिक शिक्षा का महत्व बताने एवं व्यवस्था सुधार प्रयास हेतु अपना शोध शीर्षक 'सहारनपुर मण्डल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि : एक अध्ययन' रखा है।

अध्ययन का उद्देश्य-

प्रस्तुत शोध समस्या अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूल के विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियां देखना।
2. सहारनपुर मंडल स्थित जूनियर हाई स्कूलों में उपलब्ध खेल ससाधनों की जानकारी प्राप्त करना।
3. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करना।
4. शारीरिक शिक्षा विषय की उपेक्षा पर राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित कराना।
5. मजबूत एवं स्वस्थ व्यक्तित्व विकास हेतु सरकार को सुझाव प्रदान करना।

साहित्यक सर्वेक्षण

सम्बंधित साहित्य अध्ययन के लाभ

1. शोध कार्य की पुनरावृत्ति नहीं होती है।
2. समस्या सम्बन्धी जो कार्य हो चुके हैं उनको ज्ञात कर सूचना प्राप्त होती है।
3. शोध कार्य में होने वाले सम्भावित दोषों से मुक्ति।
4. समय की बचत होती है।
5. शोध सम्बन्धी परिकल्पनाएं बनाने में सहायता मिलती है।

पटेल सुशीला देवी (2018) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन" था। शोध अध्ययन प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत् शिक्षक, शिक्षिका तथा शिक्षामित्रों की व्यावसायिक संतुष्टि जानने के लिए किया गया था इसके अंतर्गत 100 शिक्षक, 100 शिक्षिकाएं एवं 100 शिक्षामित्रों का चयन सामान्य यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। शोध कार्य हेतु नमूना रायबरेली जनपद के ग्रामीण एवं शहरी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षक,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिक्षिकाओं तथा शिक्षामित्रों को लिया गया। शोध उपरांत प्राप्त परिणामो के विश्लेषण के आधार पर पाया गया कि प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक, शिक्षिकाओं एवं शिक्षामित्रो की व्यवसयिक संतुष्टि का स्तर अलग-अलग है। जहाँ शिक्षक एवं शिक्षिकाएं अपने शिक्षण व्यवसाय के प्रति सतुष्ट है वहीं शिक्षामित्र शिक्षको एवं शिक्षिकाओं के समान वेतन न मिलने के कारण व्यवसायिक असंतोष को दर्शाते है।

E Jagran (2018) में बताया गया कि अंधारठाढी प्रखण्ड, मधुबनी बिहार में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है परंतु सरकारी स्कूलों मे खेल प्रतिभाएं संसाधनों के अभाव में दम तोड़ रही है। कई स्कूलों मे खेल के मैदान ही उपलब्ध नहीं हैं, जहां मैदान है वहाँ बुनियादी सुविधाओं एवं जागरूकता का अभाव है। कार्यरत एक शिक्षक ने बताया कि स्कूल में लगभग 500 बच्चें हैं, कुछ बच्चे बहुत प्रतिभाशाली हैं मगर खेल के नाम पर कोई सरकारी सहायता प्राप्त नहीं हैं। क्रिकेट से जुड़े खिलाड़ी ने बताया कि भारत विश्व स्तर पर खेलों में अति पिछड़ा हुआ है जिसका प्रमुख कारण विधालयों में खेल सुविधाओं का अभाव है, सरकार को चाहिए कि विधालयों में शिक्षा की भांति खेलकूद को भी अनिवार्य अंग के रूप में लागू किया जाए।

Sopanaru, Bojan et al. (2017) ने अपने शोध अध्ययन "Stress factor and quality of life adult haemodialysis patient" मे बताया कि शारीरिक स्वस्थता पर तनाव अपना नकारात्मक प्रभाव डालता है, इसलिए स्कूल शिक्षा में शारीरिक शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना अत्यन्त महत्वपूर्ण हो जाता है।

Health and physical education guide for 6th (2016) में बताया गया कि शारीरिक शिक्षा एवं स्वास्थ्य में शिक्षक का कुशल संचलन ही महत्वपूर्ण भूमिका निवर्हन करता है। बीते कुछ वर्षों में शारीरिक शिक्षा एवं योग के अनुस्थापन ने इसे एक समन्वित अनुशासन के रूप में बदल दिया है। शारीरिक शिक्षा विषय की नीतियों एवं महत्व को देखते हुए शारीरिक शिक्षा अध्यापकों को क्षेत्र की आवश्यकता की पूर्ति हेतु संसाधन एवं विषय सामग्री एवं उचित कौशल की आवश्यकता है।

Singh, Dr. Priyanka (2013) द्वारा किए गये शोध अध्ययन जिसका शोध शीर्षक "Study of Sports Infrastructures and Facilities in Schools and colleges of Purvanchal" था जिसका उद्देश्य पूर्वाञ्चल के सरकारी स्कूलों एवं प्राइवेट स्कूलों के मध्य खेल संसाधनों एवं खेल सुविधाओं को देखना था। शोध अध्ययन के उपरांत इन्होंने पाया कि खेल अवसंरचना से संबंधित सुविधाएं जैसे बैडमिंटन कोर्ट, कबड्डी कोर्ट, खो-खो कोर्ट, स्विमिंग पूल, टेबल टेनिस, बहुउद्देशीय व्यायाम शाला, खेल अवसंरचन विकास समिति, खेल उपकरण स्टोर रूम उपलब्धता, पर्याप्त स्टाफ की उपलब्धता, स्वास्थ्य शिक्षा प्रयोगशाला, आउटडोर खेल मैदान दोनों स्कूलों में लगभग एक समान पाए गए उनकी उपलब्धता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। एथलेटिक ट्रैक, शारीरिक शिक्षा गतिविधियों एवं कक्षा-कक्ष शिक्षण के मध्य उचित अनुपात, लिखित शारीरिक शिक्षा पाठ्यक्रम, ग्राउंड्स मैन उपलब्धता, खेल उपकरण सुविधा इत्यादि सरकारी स्कूलों में प्राइवेट स्कूलों से अधिक पाई गई। शारीरिक शिक्षा शिक्षक शिक्षकों की योग्यता, शारीरिक स्वस्थता परीक्षण, खेलने की सुविधा, बच्चों और स्टाफ का एक साथ खेलने की सुविधा, खेल की फीस, कोचिंग कैंप, इंट्राम्यूरल एवं एक्सट्राम्यूरल प्राइवेट एजेंसी का खेल को संचालित करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत्यादि में प्राइवेट और सरकारी स्कूलों के मध्य कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया। स्टाफ की सैलरी देने में सरकारी और प्राइवेट स्कूल के मध्य सार्थक अंतर पाया गया।

Subhdhi (2013) ने - Job Satisfaction of Secondary School Teachers" नामक शोध विषय- के निष्कर्ष में पाया कि महिला अध्यापिकाएं पुरुष अध्यापकों की अपेक्षा अपनी नौकरी से अधिक संतुष्ट है एवं 22 से 35 आयु वर्ग के अध्यापक 36 से 55 आयु वर्ग के अध्यापको से अधिक सतुष्ट पाये गये।

Ray U.S. et al. (2011) द्वारा अपने शोध अध्ययन में "युवा शोधार्थियों के शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य पर योग का प्रभाव" नामक शोध अध्ययन में 20 से 25 वर्ष के 54 अभ्यर्थियों (28 प्रायोगिक व 26 नियंत्रित) को 10 माह तक योगाभ्यास कराया गया। 10 माह पश्चात् प्रयोगिक इस समूह में नियंत्रित समूह की अपेक्षा कधों, गर्दन, जांघों के जोड़ों में लचीलापन पाया गया। योग अभ्यास के बाद चिंता एवं अवसाद में कमी तथा मानसिक स्थिति में संतुलन एवं सुधार पाया गया।

स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह आधार पत्र (2009) द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश स्कूलों मे जहाँ शारीरिक शिक्षा अध्यापक नियुक्त होते हैं वहाँ उन्हें खेल ओर शारीरिक शिक्षा क्रियाविधि के अतिरिक्त अन्य जिम्मेदारियां सौप दी जाती हैं। अधिकांश स्कूल ऐसे पाये गये जहाँ शारीरिक शिक्षा शिक्षक होते ही नहीं हैं। विद्वानों ने माना कि शारीरिक शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विद्यार्थियों की उपलब्धि का अन्य विषयो की तरह मूल्यांकन किया जाना चाहिए एवं शारीरिक शिक्षा को प्राथमिकता देनी चाहिए।

Verma, Manisha (2004) ने "उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की दैनिक प्रार्थना बालसभा एवं खेल कूद संबन्धी समस्यायें" का अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष मे बताया कि इस स्तर पर बच्चों में दैनिक प्रार्थना से सम्बन्धित समस्यायें है और दैनिक प्रार्थना के प्रति उनकी रूचि औसत है एवं प्रतिदिन की प्रार्थना एवं खेल के प्रति रूचि में सामान्य स्तर का संबंध पाया जाता है। यह दोनो साथ साथ बढ़ती है।

Abbassi (2003) इन्होंने अपने शोध अध्ययन "Study of job satisfaction" में ईरान और भारत में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षणों के बीच कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि 50 प्रतिशत से अधिक शिक्षकों की नौकरी से सतुष्टि का स्तर मध्यम हैं।

Gould, D., Greenleaf, C., et al. (2000) द्वारा अपने शोध विषय "Positive and negative factors influencing U.S. Olympic athletes and coaches" के अंतर्गत उन कारकों की जांच की जिनके बारे में एथलीटों ने माना था कि 1998 के शीतकालीन ओलंपिक खेलों के दौरान उनके प्रदर्शन पर सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव पड़ा था। शोधकर्ताओं ने सात ओलंपिक एथलीटों के साथ गहन फ़ोन साक्षात्कार आयोजित किए और खेलों में भाग लेने वाले अतिरिक्त 83 ओलंपिक एथलीटों का सर्वेक्षण किया। शोध में एथलीटों का लिंग नहीं बताया गया। इन एथलीटों ने माना कि नौ कोचिंग तथ्यों ने उनके प्रदर्शन पर नकारात्मक प्रभाव डाला है इनमे खराब संचार और जानकारी, टीम का गलत चयन निर्णय, उपकरण परिवर्तन और समस्याएं, समर्थन और प्रोत्साहन की कमी, खराब योजना, तकनीकी ओर रणनीतिक त्रुटियां, उत्साह और प्रयास की कमी, अनुचित उपचार और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नकारात्मक रवैया, कोचों पर एथलीट द्वारा कम भरोसा एवं एथलीटों से ज्यादा अपेक्षाएं नकारात्मक प्रदर्शन को बढ़ाने का जिम्मेदार कारक रही।

लोक शिक्षण संचालनालय मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा वर्ष (1999-2000) द्वारा स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इण्डिया(SGFI) की सलाह पर तथा उनके द्वारा आयोजित की जाने वाली अनेक खेल प्रतियोगिताओं के आधार पर लोक शिक्षण संचालनालय मध्य प्रदेश भोपाल द्वारा वर्ष (1999-2000) में आयोजित होने वाली वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं गतिविधियों के लिये जो खेल कलेण्डर जारी किया है उनमें फुटबाल, हॉकी, वालीबाल, बास्केटबाल, बैडमिंटन, टेबलटेनिस, लॉनटेनिस,तलवारबाजी, तैराकी, वाटर पोलो, बॉलबैडमिंटन, क्रिकेट, जूडो-कुश्ती, हैण्डबाल, साफ्टबाल, बेसबाल, शतरंज, एथलेटिक्स, जिमनास्टिक, भारत्तोलन (केवल बालकों के लिए) खेल आयोजनों का उल्लेख किया है। उपरोक्त गतिविधियों के आधार पर यह सुनिश्चित होता है कि विधालय स्तर पर इन खेल सुविधाओं का होना आवश्यक है।

शोध की सीमाएं–

1. बच्चों का खानपान एवं दैनिक क्रियाकलाप।
2. बच्चों का पूर्व प्रशिक्षण।
3. बच्चों का सामाजिक एवं आर्थिक आधार।
4. शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों का सामाजिक एवं आर्थिक आधार।
5. अनुदेशकों की आयु एवं स्वास्थ्य।
6. अनुदेशकों की अपने कार्य प्रति निष्ठा।

शोध की परिसीमाएं–

1. सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले समस्त जूनियर हाई स्कूल।

2. खेल उपलब्धियों के अंतर्गत मंडलीय स्तर पर प्रतिभागी छात्र- छात्राएं।

3. चर के रूप में खेल उपलब्धियां परिसीमाओं के अंतर्गत हैं।

4. खेल संसाधन इस शोध की परिसीमा है।

5. अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि।

शोध परिकल्पना-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु परिकल्पना इस प्रकार बनाई गई।

1. सहारनपुर मंडल के अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक विद्यालयों के विद्यार्थियों की खेल उपलब्धियों में संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2. सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक वाले जूनियर हाई स्कूलों में उपलब्ध खेल संसाधनों के मध्य संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।

3. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत पुरुष एवं महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि के मध्य संभवत: कोई अंतर नहीं पाया जाएगा।

4. सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों में कार्यरत महिला अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि स्कोर संभवत: पुरुष अनुदेशकों से अधिक होग।

शोध प्रविधि

वर्तमान शोध विषय अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध में सहारनपुर मंडल के ऐसे परिषदीय जूनियर हाईस्कूलों के बच्चों की उपलब्धियों का सर्वेक्षण करना जिनमें शारीरिक शिक्षा अनुदेशक नियुक्त हैं एवं इतनी ही संख्या में ऐसे जूनियर हाईस्कूलों का जिनमें शारीरिक शिक्षा अनुदेशक नियुक्त नहीं हैं। मंडल स्तर खेलों में प्रतिभाग का पूर्व रिकॉर्ड। खेल संसाधनों की जानकारी, शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों का कार्य के प्रति संतुष्टि जानने हेतु सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया जाएगा।

नमूना चयन-

प्रस्तुत शोध अध्ययन शीर्षक 'सहारनपुर मंडल के शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक जूनियर हाई स्कूल के बच्चों की खेल उपलब्धियां, खेल संसाधन एवं अनुदेशको की कार्य संतुष्टि:एक अध्ययन' हेतु विषयों का चयन सरल यादृच्छिक नमूनाकरण विधि (Simple random sampling) का उपयोग करते हुए किया गया है।

शोध अभिकल्प-

प्रस्तुत शोध के लिए अभिकल्प इस प्रकार तैयार किया गया है जिससे सहारनपुर मंडल के समस्त शारीरिक शिक्षा अनुदेशक वाले एवं इतनी ही संख्या में गैर अनुदेशक वाले जूनियर हाईस्कूल के बच्चों के मण्डल स्तर पर खेल प्रदर्शन में अंतर को देखा जा सके,उपलब्ध खेल संसाधनों एवं अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करते हुए शोध समस्या को निष्पादित किया जाएगा।

शोध के लिए प्रयुक्त मापनी

खेल उपलब्धियां-

सहारनपुर मंडल के जूनियर हाई स्कूलों के बच्चों का मंडल स्तर खेलों में प्रतिभाग का खेल उपलब्धि संबंधी विवरण उपलब्ध अभिलेख विवेचना के आधार पर करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेल संसाधन-

प्रश्नावली-Man-made Questionnaire constructed by Dr. Priyanka Singh, Department of Physical Education, Banasthali University Rajasthan 2013 Questionnaire for facilities and infrastructure available (profile of the school)

अनुदेशक कार्य संतुष्टि-

प्रश्नावली-Standardized questionnaire constructed by Dr. Meera Dixit for job satisfaction 1993.

सांख्यिकी तकनीक

शोध हेतु साख्यिकी विश्लेषण के लिए 'खेल उपलब्धियों' एवं 'शारीरिक शिक्षा अनुदेशकों की कार्य संतुष्टि' हेतु **'स्वतन्त्र-टी परीक्षण'** का प्रयोग किया जाएगा। 'खेल संसाधनो' के बारे में जानकारी के लिए वर्णनात्मक साख्यिकी अर्थात **'आवृति और प्रतिशत'** एवं **'काई-स्क्वायर'** का उपयोग शारीरिक शिक्षा अनुदेशक एवं गैर अनुदेशक स्कूलो के बीच खेल संसाधनों के महत्त्वपूर्ण अंतर का पता लगाने के लिए किया जाएगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संदर्भ ग्रंथ

- Abbassi's (2003) Study of job satisfaction. Journal of Humanities and Social Science23(9) 7714.
- E Jagran (2018) https://www.jagran.com/lite/bihar/madhubani-not-only-resources-for-sports-in-schools-18226586.html Publish/Updated: Sun,22 July 2018, 05:50 PM(IST).
- Gould, D., Greenleaf, C., Dieffenbach, K., Lauer, L., Chung, Y., Peterson, K. (2000) Positive and negative factors influencing U.S. Olympic athletes and coaches: Nagano games assessment. Track Coach, 153, 4889-4893.
- Health and physical education "A teacher's guide for class 6" first edition, May, NCERT 2016.
- Johnson, M. (2011) Gold Rush, What Makes an Olympic Champion 7 London Harper Sport.
- NCRB (2018) https://www.gaoncomotion.com/dises-causing-suicide-nrcb-report-46964.
- Pemoen, F., Hoggard, R., & Peters, D.M., (2014) performance progress and leadership behavior, International journal of coaching science 8(1), 69-81.
- Ray US. et al. (2011) Impact of yogic practice on psycho-physiological, British Psychiatric Journal Vol. II pp. 270-272.
- Singh, Dr. Priyanka (2013) http://hdl.handle.net10603/141820.
- Sixth survey of education research (1993-2000) page no. 96
- Sopanaru. C. Bojan, A. & Lorga, M. (2017) Stress factor and quality of life adult hemodialysis patient, Global Journal of Psychology Research: new trend and Issue 6(4).

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

- Subhdhi (2013) Job satisfaction of teacher educators concerning their attitude towards Teaching Journal of All India Association for Educational Research 19(4)86-87.
- US Department of Health and Human Services 2008
- Verma, Manisha (2004) dissertation of M.Ed., institute of higher learning, Gandhi Vidhya Mandir University, Sardarshahar, page no. 95.
- WHO (2020) https://www.amarujala.Com/Coranavirus-world-health-organization-Guidelines-by-WHO-5 Feb-2020.
- WHO(2014)https://M.aajtak.in/news/national/story/world-suicide/preventation-day-who- reports-in-every 40 sec-someone-somewhere-suicides-779482-2014-09-09.
- पटेल सुशीला देवी (2018) "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत शिक्षक एवं शिक्षामित्रों की व्यवसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, रिमार्किंग एन अनालाईजेशन,vol-3,ISSUE-8,Nov.2018.pp.138-142.
- लोक शिक्षण संचालनालय, मध्य प्रदेश द्वारा प्रकाशित स्पोर्ट्स कलेण्डर, 1999-2000.
- सिंह, डॉ० एस० एन०(2018) शारीरिक शिक्षा एक समग्र अध्ययन, खेल साहित्य केन्द्र नई दिल्ली, पेज सं० 64.
- स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र (2009) राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, जनवरी, नई दिल्ली.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar